National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(53): 222-224
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.टी.लतामंगेश
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
तिरुपती – 517507, आंध्रप्रदेश

Correspondence:
डॉ.टी.लतामंगेश
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
तिरुपती – 517507, आंध्रप्रदेश

प्रेमचंद की कहानियों का वैचारिक स्वरूप

डॉ. टी. लतामंगेश

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य और विशेषकर हिंदी कहानी साहित्य में एक महत्वपूर्ण विषय है। प्रेमचंद ने समाज की वास्तविकताओं को उजागर करने के लिए अपनी कहानियों को एक सशक्त वैचारिक माध्यम बनाया। उनके कथा-साहित्य में गहरी सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और राजनैतिक सोच देखने को मिलती है। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का नाम यथार्थवादी और जन-सरोकारों से जुड़े साहित्यकार के रूप में सर्वोपरि है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से न केवल समाज का सजीव चित्र प्रस्तुत किया, बल्कि उसमें व्याप्त कुरीतियों, विषमताओं और अन्याय के विरुद्ध आवाज़ भी उठाई। विशेष रूप से उनकी कहानियाँ सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत वैचारिक और संवेदनशील हैं।

हिंदी साहित्य के युग-प्रवर्तक कथाकार मुंशी प्रेमचंद को भारतीय कथा-साहित्य का 'जागरण युग' कहा जाता है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के यथार्थ को उजागर किया और साहित्य को महज़ मनोरंजन का साधन न मानकर सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया। विशेषकर उनकी कहानियों का वैचारिक स्वरूप इतना समृद्ध, विविध और गहन है कि वह केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

यहाँ प्रेमचंद की कहानियों के वैचारिक स्वरूप के प्रमुख पक्ष प्रस्तुत हैं।

सामाजिक यथार्थवाद

प्रेमचंद की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को उजागर करती हैं। वे समाज के शोषित, पीड़ित, दलित और मजदूर वर्ग की समस्याओं को गहराई से समझते थे और उन्हें अपनी कहानियों में उजागर करते थे। उन्होंने ऊँच-नीच, जातिवाद, अंधविश्वास और रूढ़ियों के विरुद्ध लेखनी चलाई। "सद्गति" और "कफ़न" जैसी कहानियाँ समाज में व्याप्त जातिवाद और गरीबी के अमानवीय स्वरूप को दर्शाती हैं। ब्राह्मणवादी पाखंड और निम्न जाति के प्रति समाज की अमानवीयता को उजागर किया गया है। प्रेमचंद की कहानियों का मूल आधार समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय और शोषण के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिरोध है। उन्होंने निम्नवर्ग, दलितों, स्त्रियों और किसानों के जीवन की सच्चाई को बिना किसी अलंकरण के प्रस्तुत किया।"कफ़न" में

ग़रीबी की मार और समाज की संवेदनहीनता को कटाक्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आर्थिक विषमता और वर्ग संघर्ष

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में गरीबों और अमीरों के बीच की खाई को उजागर किया। उन्होंने ज़मींदार, साहूकार और पूंजीपतियों द्वारा गरीबों के शोषण को दिखाया। प्रेमचंद की कहानियों में गरीब किसानों, मजदूरों और निम्नवर्गीय लोगों के शोषण का मार्मिक चित्रण मिलता है। उनके पात्र सदैव जीवन की त्रासदी से जूझते हुए भी नैतिक ऊँचाई पर खड़े रहते हैं। "पूस की रात", जिसमें गरीब किसान की विवशता और दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है। “पूस की रात” में हल्कू नामक किसान की ठंड में रात बिताने की मजबूरी केवल एक व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि किसान वर्ग की सामूहिक विवशता है। “नमक का दरोगा” में नैतिकता और ईमानदारी को पूँजीवाद और भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़ा किया गया है। प्रेमचंद आर्थिक न्याय की मांग करते हैं और समाज की उस संरचना पर सवाल उठाते हैं जो एक वर्ग को शोषण करने की छूट देती है।

नारी विमर्श

प्रेमचंद की कहानियों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, उनके संघर्ष और स्वतंत्रता की आकांक्षा को प्रमुखता दी गई है। उन्होंने स्त्री को केवल एक अबला के रूप में नहीं, बल्कि एक जागरूक और संघर्षशील इकाई के रूप में चित्रित किया। प्रेमचंद की कहानियों में नारी पात्रों को केवल सहानुभूति के पात्र के रूप में नहीं, बल्कि चेतना संपन्न, आत्मनिर्भर और विवेकशील रूप में चित्रित किया गया है। उन्होंने समाज में स्त्रियों की स्थिति, संघर्ष और मानसिक द्वंद्व को प्रमुखता दी। प्रेमचंद ने नारी पात्रों को केवल सहनशील या अबला नहीं, बल्कि विवेकशील, स्वाभिमानी और दृढ़ चरित्र के रूप में चित्रित किया। उनकी कहानियाँ नारी सशक्तिकरण के बीज बोती हैं। "दो बैलों की कथा" की गौरी प्रतीकात्मक रूप से स्त्री शक्ति को दर्शाती है। "बड़े घर की बेटी" में नारी की गरिमा और विवेक को दर्शाया गया है। “सौत” में स्त्री-पुरुष संबंधों में ईर्ष्या, अधिकार और आत्मबल की टकराहट का गहराई से चित्रण किया गया है। प्रेमचंद की नारी पात्र कमजोर नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव की वाहक बनती हैं।

नैतिक और मानवीय मूल्य

प्रेमचंद की कहानियाँ नैतिकता, करुणा, सहानुभूति और कर्तव्य जैसे मूल्यों को बल देती हैं। वे मानते थे कि साहित्य समाज को दिशा देने का कार्य करता है। प्रेमचंद की कहानियाँ केवल सामाजिक आलोचना नहीं करतीं, बल्कि नैतिक मूल्यों को भी स्थापित करती हैं। उन्होंने करुणा, त्याग, ईमानदारी और मानवता को उच्चतम स्थान दिया। प्रेमचंद की कहानियाँ एक ओर यथार्थ का नग्न चित्रण करती हैं तो दूसरी ओर मानवता, त्याग, करुणा और न्याय जैसे मूल्यों की स्थापना भी करती हैं। वे चाहते हैं कि मनुष्य अपने जीवन में नैतिकता को स्थान दे। "ईदगाह", जहाँ हामिद का त्याग और संवेदनशीलता एक गहरी नैतिक सीख देती है। "पंच परमेश्वर" में न्या य की भावना और सत्य की विजय को प्रमुखता दी गई है।

देशभक्ति और स्वतंत्रता चेतना

हालाँकि प्रेमचंद की कहानियों में प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन का चित्रण कम है, फिर भी उनमें स्वतंत्रता संग्राम की चेतना और राष्ट्रीय भावना परोक्ष रूप से देखने को मिलती है। प्रेमचंद का साहित्य परोक्ष रूप से स्वतंत्रता संग्राम की चेतना को पोषित करता है। उन्होंने अंग्रेज़ी शासन, भ्रष्टाचार और नैतिक पतन के विरुद्ध कलम चलाई। हालाँकि प्रेमचंद की कहानियाँ प्रत्यक्ष रूप से राजनीति से जुड़ी नहीं हैं, परंतु उनमें स्वतंत्रता संग्राम की चेतना, औपनिवेशिक व्यवस्था का विरोध और भारतीय आत्मबल का समर्थन मौजूद है। "नमक का दरोगा" में ईमानदारी और ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ़ नैतिक विद्रोह को दर्शाया गया है।

प्रेमचंद की कहानियों में प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से गहराई से विचार प्रस्तुत किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, “दो बैलों की कथा” में हीरा और मोती नामक बैल केवल पशु नहीं, बल्कि किसान वर्ग की संघर्षशीलता, एकता और सहनशीलता के प्रतीक हैं। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में सहज, सरल और प्रांजल भाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा आम जन की

भाषा है, जिससे वे सीधे जनमानस से संवाद करते हैं। यही भाषा उनकी विचारधारा को प्रभावी ढंग से पाठकों तक पहुँचाती है। उनके विचारक्रम को किसी एक ही निश्चित कोण पर सीमित नहीं किया जा सकता। कारण, वह सदैव विकासमान और परिवर्तनशील रहा हैं। जैसे-जैसे प्रेमचंद के व्यक्तित्व का विकास होता रहा हैं, उनकी रचनाए नवीन कला-चेतन को अपनाती रही। अतः जहां एक और प्रेमचंद व्यथार्थवाद एवं आदर्शवाद एवं मनोविज्ञान का समन्वय करते हुए पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का चित्रण प्रस्तुत किया, वहीं सुधारवादी आंदोलन और महात्मागांधी के जीवन-दर्शन से प्रभावित होने के कारण आदर्श को वे महावपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो प्रेमचन्द अपने आरम्भिक चरण में भावुक एवं आदर्शोन्मुखी रहे। धीरे-धीरे परस्थिथियों एवं व्यक्तह भावों के बीच गहरा सामंजस्य होने के कारण उनके आदर्श की प्रवृति संयमित होने लगी और अंतहीं चरण तक आते-आते उनकी दृष्टि यथार्थपरक हो गई।

निष्कर्ष:

प्रेमचंद की कहानियाँ विचारों की प्रयोगशाला हैं — जहाँ मनुष्य, समाज और व्यवस्था की परख की जाती है। उनके कथा साहित्य का वैचारिक स्वरूप इतना व्यापक और गहन है कि वह केवल अपने समय तक सीमित नहीं, बल्कि आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। उन्होंने साहित्य को आमजन की ज़ुबान दी और उसे समाज के दर्पण के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कहानियों ने यह सिद्ध कर दिया कि "साहित्य समाज का दर्पण नहीं, उसकी आत्मा है।" प्रेमचंद का साहित्य भारतीय चेतना का सच्चा दस्तावेज है।

संदर्भ सूची

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में विचार-तत्व – सरोज गुप्ता

प्रेमचंद एक पुनर्मूल्यांकन – विश्वनाथ त्रिपाठी

प्रेमचंद की कहानियाँ: आलोचनात्मक अध्ययन - डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी

प्रेमचंद और उनका युग – नामवर सिंह

प्रेमचंद व्यक्तित्व और कृतित्व – डॉ रामविलाश शर्मा